आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 1/जनवरी 2023
Received:20/01/2023; Published:31/01/2023

जीवन का हिसाब

डॉ. कृति कुमारी

मूल: सुकुमार राय (बंगला)

ज्ञान समझाते बाबूसाहब चढ़े शौक के बोट में,
माँझी रे क्यों, "बोल सकते हो सूरज क्यों उगता है?
चाँद क्यों बढ़ता घटता है? ज्वार क्यों आता है?"
वृद्ध माँझी आश्चर्यचकित होकर खिलखिलाकर हँसता है।
बाबू बोलते हैं, "सारा जीवन मरे हो तुम खटकर,
ज्ञान बिना जीवन है तुम्हारा चार आना ही माटी।"

थोड़े ही बाद में कहते हैं बाबू, "बोलो तो देखें सोचकर
नदी की धारा कैसे आती है पहाड़ से उतरकर?
बताओ तो क्यों नमक से भरा है सागर का पानी?
माँझी कहता है, "अरे महाशय उतना क्या और जानता हूँ?"
बाबू कहते हैं, "इस उम्र में जानते नहीं हो ये भी
जीवन तुम्हारा बेकार गया, आठों आना खाली।"

फिर सोचकर कहे बाबू, "बोलो तो अरे बूढ़े आदमी,
क्यों इस तरह नीला दिखाई देता आकाश का ये छोर?
बोलो तो देखें सूर्य चाँद में ग्रहण लगता है क्यों?
वृद्ध बोले, "मुझे इस तरह से क्यों लज्जा दे रहे हैं?"
बाबू बोले, बोलेंगे क्या और बोलेंगे तुम्हें क्या जो,-
देख रहा हूँ जीवन तुम्हारा बारह आना ही वृथा।"

थोड़े ही बाद में तूफान उठा, लहर उठी है,
बाबू देखते हैं, नौका डूब रहा है मानो डोलकर!
माँझी रे बोलो, "ये क्या आफतओ रे ओ भाई मा !ँझी,
डूबा क्या नौका इस बार? मरूँगा क्या आज ही?"
माँझी पूछता है, "तैराकी जानते हो?"- सिर हिलाए बाबू,
मूर्ख माँझी बोलता है, "महाशय, अभी क्यों जब्द हो गए?
अंत में बचे तो मेरी बात का हिसाब करना पीछे,
तुम्हारा देखें तो जीवन सोलह आना ही मित्थया है!'

****